Subject - Philosophy
Class - B.A, Part - III (Hons)
Paper - V

धर्म और विज्ञान संबंध
Relation of Religion and Science

विज्ञान और धर्म का स्त्रोत एक है। दोनों का आधार मानव का सैद्धान्तिक दृष्टिकोण है। दोनो का लक्ष्य सत्य की प्राप्ति है। दोनो का उद्देश्य मानवता की सेवा है। परंतु फिर भी धर्म और विज्ञान के बीच विरोध एवं अंतर दिखलाने का प्रयास किया जाता है।

धर्म और विज्ञान का विरोध बतलाते हुए कहा जाता है कि धार्मिक मनोवृति व्यक्तिगत होती है। धर्म में हम सिर्फ वास्तविकता का ज्ञान ही नहीं अपनाना चाहते है बल्कि वास्तविकता का मूल्यांकन करते है।

विज्ञान का उद्देश्य कार्य -

कारण सिद्धान्त के द्वारा वस्तुओं के बीच स्थिरता कायम करना है। विज्ञान विश्व की भिन्न अनुभूतियों के बीच कार्य कारण संबंध को उपस्थित कर संतोष की साँस लेता है। विज्ञान के अनुसार प्रत्येक दृश्य वस्तुएँ एक दूसरे से संबंधित है जिसके फलस्वरूप विश्व में आकस्मिकता और संयोग का कोई स्थान नहीं है।

धर्म का उद्देश्य वस्तुओं की व्याख्या करना है। धर्म में वस्तुओं की व्याख्या के लिए कल्पित कथाओं (Myths) का सहारा लिया जाता है। फिर, हम कह सकते हैं कि धर्म एक स्वतंत्र अनुभूति है। धर्म का संबंध आंतरिक जीवन से है। परंतु विज्ञान इसके विपरीत बाहरी दुनियाँ से संबंधित है। विज्ञान का संबंध मनुष्य के ग्राह्य अनुभव से है। मनुष्य के आंतरिक अनुभव की उपेक्षा विज्ञान करता है।

इसके अतिरिक्त, विज्ञान और धर्म में यह भी एक भेद है कि विज्ञान

का संबंध वस्तु (Facts) से है। परंतु धर्म का संबंध मूल्यों (values) से प्राप्त करना है। आध्यात्मिक मूल्यों (spiritual values) को प्राप्त करना धर्म का मूल उद्देश्य है। मूल्य की दुनियाँ जिसे धर्म अत्यधिक प्रधान देता है विज्ञान को अज्ञात प्रतीत होता है।

विज्ञान के नियम अस्थायी एवं अशाश्वत होते हैं। आज जो सिद्धान्त विज्ञान में मान्य है भविष्य में उनके विरोध की संभावना मानी जा सकती है। इसके विपरीत धार्मिक मत (religious creed) स्थायी एवं शाश्वत व सिद्धांतो का निरूपण करते हैं। यदि धार्मिक सिद्धांतों में परिवर्तन होता भी है तो वह आकार के क्षेत्र में ही होता है।

धर्म और विज्ञान में मूल यह है कि धर्म का प्रधान उद्देश्य मुक्ति की प्राप्ति है जबकि विज्ञान का उद्देश्य नित्य की प्राप्ति है। धर्म अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ईश्वर की प्रस्थापना करता

है तथा अपनी भावनाओं एवं संवेगों के द्वारा ईश्वर के साथ रागात्मक संबंध कायम करता है। विज्ञान, इसके विपरीत अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्राकृतिक तथ्यों तथा प्राकृतिक नियमों में उलझे रहता है। विज्ञान का संबंध प्राकृतिक जगत से है जब कि धर्म का संबंध अतिप्राकृतिक सत्ता (super natural power) से है।

धर्म और विज्ञान में भेद यह है कि धर्म सृष्टिवाद (Creationism) में विश्वास करता है जब कि विज्ञान विकास-वाद (Evolutionism) में विश्वास करता है। धर्म के अनुसार संसार ईश्वर की सृष्टि है। विज्ञान के अनुसार यह संसार विकास का फल है। विश्व की वस्तुओं के परिवर्तन एवं विकास के फलस्वरूप नये-नये विषयों का प्रादुर्भाव होता है।

उक्त भेद के फलस्वरूप धर्म और विज्ञान में अन्य भेद भी परिलक्षित होता है। धर्म नैतिक नियमों को मानता है परंतु विज्ञान नैतिक नियमों को नहीं स्वीकार करता है।

कुछ लोगों ने धर्म और विज्ञान में विरोध दुश कहा है कि विज्ञान सैद्धान्तिक (Theoretical) है जब कि धर्म व्यावहारिक (Practical) है। परंतु इससे धर्म और विज्ञान के बीच विरोध मानना असंगत है। विज्ञान की प्रवृत्ति व्यावहारिक है। विज्ञान ने अनेकानेक खोज के द्वारा हमारे व्यावहारिक जीवन को सरल बनाया है। धर्म में भी सिद्धांतों की उपेक्षा नहीं की गई है। प्रत्येक धर्म में धार्मिक सिद्धान्तों का महत्वपूर्ण स्थान है।

उपयुक्त अंतर के फलस्वरूप धर्म और विज्ञान के बीच एक अन्य अंतर प्रस्फुटित होता है। विज्ञान मस्तिष्क की देन है। धर्म का संबंध मानव हृदय से है। धर्म रागात्मक संबंध को प्रधानता देता है। बुद्धि धर्म का आधार है। धर्म में बौद्धिक तत्व का समावेश है यद्यपि कि विज्ञान हृदय विहीन है।

Einstein ने अपने लेख (Science and Religion) में धर्म और विज्ञान के संबंध की व्याख्या एक उपमा के द्वारा की है। उन्होंने कहा है कि धर्म के अभाव में विज्ञान पंगु है और विज्ञान के अभाव में धर्म अंधा। Einstein के अनु- -सार धर्म हमारे गन्तव्य स्थान को निश्चत करता है परंतु विज्ञान हमारे समक्ष उन साधनों को रखता है जो लक्ष्य की प्राप्ति अथवा गंतव्य स्थान तक पहुँचने में हमारी सहायता करते हैं। अत: विज्ञान और धर्म में ~~प्र~~ पारस्परिक निर्भरता का संबंध है।

समाप्त

Dr. Md Arshad Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College
V.K.S.U, Ara.